की, यदि हां, तो बातचीत का ब्यौरा क्या है और इस संबंध में क्या निर्णय लिया गया; और

(ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सलमान खुर्शीद): (क) से (ग) 25 जून, 1995 को दक्षिण त्रिपुरा में बेलोनिया में भारत-बंगलादेश सीमा के पार बंगलादेश राइफल ने मुहरी नदी के किनारे पर मरम्मत कार्य में लगे भारतीय अधिकारियों और श्रमिकों पर बिना किसी कारण गोली चलाई। इस घटना में कोई व्यक्ति घायल नहीं हुआ था। 27 जून, 1995 को बेलोनिया में हमारे सीमा सुरक्षा बल तथा बंगलादेश राइफल के बीच कमांडेंट स्तर पर एक 'फ्लैग' बैठक हुई थी। बंगलादेश राइफिल ने मुहरी तट पर चल रहे मरम्मत कार्य को बाधा न पहुंचाने के सम्बन्ध में लिखित में दिया था। 3 जुलाई 1995 से उक्त कार्य पुनः आरंभ कर दिया गया है।

Electrification of railway stations in Gujarat

1545. SHRI RAJUBHAI A. PARMAR: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) what are the details of railways stations in Gujarat where electrification work has been in progress during 1993-94 and 1994-95 till date;

(b) what are the details of the amount spent on this work during the above period; and

(c) by when this work is likely to be completed?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C.K. JAFFER SHARIEF): (a) and (b) The names of the railways stations in Gujarat where electrification work has been in progress and the amount spent during 1993-94, 1994-95 and till date in 1995-96 are as under:—

(i) Stations where work has been in progress during the year 1993-94.

Sl.No.	Name of the stations	(in Rs.) Amount spent
1.	Virochen Nagar	3,36,562
2.	Dhamarda	61,030
3.	Mitha	1,42,000
4.	Bhutakia Bhimsar	1,46,000
5.	Piprala	1,34,000
6.	Kanakot	91,419
7.	Kiyal Sedhavi	1,11,275
8.	Ramaparda	1,97,415
9.	Chandarwa	46,098
10.	Rayaka	
11.	Aditpara	2,65,000
12.	Vijapadi Road	
13.	Chamraj	1,99,691

(ii) Stations where work has been in progress during the year 1994-95.

Sl. No.	Name of the stations	Amount spent (in Rs.)
1.	Jaliya	89,074
2.	Barwala Road	2,45,615
3.	Pudgam Ganeshpura	2,23,692
4.	Pipleo	1,23,000
5.	Lorwada	1,25,000
6.	Hansapore	1,70,000

(iii) Stations where work has been in progress in 1995-96.

Sl. No.	Name of the station	Amount spent (in Rs.)
1.	Chhatral	1,42,932

(c) Electrification work at all the above stations has since been completed.

एम.टी.एन.एल. के कार्यकरण की समीक्षा

1546. श्री ईश दत्त यादव: श्री कनकसिंह मोहनसिंह मंगरोला: क्या संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या एम.टी.एन.एल. निदेशक मंडल ने दिल्ली टेलीफोन के कार्यकरण विशेषकर उसके प्रशासन तथा सतर्कता विभागों की समीक्षा की है;

(ख) यदि हां, तो समीक्षा के क्या परिणाम रहे हैं; और

(ग) सरकार ने परिणामों के आधार पर क्या कार्रवाई की है?

संचार मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री सुखराम): (क) से (ग) यह कार्यपालक के स्तर का कार्य है तथा महानगर टेलीफोन निगम लि. के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नियमित रूप से दिल्ली टेलीफोन्स के कार्यकरण की समीक्षा करते हैं। ऐसे किसी भी मामले, जिसमें बोर्ड का ध्यान आकृष्ट किया जाना अपेक्षित हो या ऐसा नीतिगत मामला जिसके

लिए बोर्ड का अनुमोदन प्राप्त करा अपेक्षित हो, तो उसे बोर्ड के विचारार्थ प्रस्तुत किया जाता है। दिल्ली टेलीफोन्स का प्रचालन कार्य, दूरसंचार विभाग के व्यापक मार्ग निर्देशों तथा नीतियों के अनुसार किया जाता है तथा इसके समग्र कार्यकरण का मूल्यांकन एक आई एम आर बी नामक स्वतंत्र एजेंसी द्वारा वर्ष में दो बार किया जाता है। समय समय पर पाई गई कमियों पर उचित कार्रवाई की जाती है।

Production of Electronic Exchanges by Indian Telephone Industries

1547. SHRI K. RAHMAN KHAN: Will the Minister of COMMUNICATIONS be pleased to state:

(a) whether Indian Telephone Industries Limited are manufacturing Electronic Exchanges, if so, the total installed capacity;

(b) what is the actual production of Electronic Exchanges by ITI during 1992-93, 1993-94 and 1994-95;

(c) what are the reasons that the total production capacity of the ITI has not been fully utilised; and

(d) whether it is a fact the DOT is not placing orders for Electronic Exchanges on the basis of its installed capacity with ITI, if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS (SHRI SUKH RAM): (a) Yes, Sir. ITI Ltd. are manufacturing Electronic Exchanges also. Though the capacity is defined in terms of finished products but in telecom sector, changes in product mix, technology, level of integration, the stages of product life cycle etc. considerably influence the capacity of a unit for a product. It is, therefore, difficult to arrive at the exact capacity of the various products of the Company.

(b) The actual production of Eletronic Exchanges by ITI during 1992-93, 1993-94 and 1994-95 has been as follows:

Year	1992-93	1993-94	1994-95
Production in million lines.	1.64	1.75	1.89

(c) Competition from other manufacturers, general fall in prices of the tele-com equipment and less demand in respect of certain types of exchanges by the DOT are the main reasons.

(d) Yes, Sir. the equiment for electronic exchanges is procured by the DOT on the basis of tenders. However, with a view to optimally utilised the capacity and infrastructure of its own PSEs viz. ITI and HTL, as also to keep these PSEs commercially viable, DOT is following a policy under which 30 to 35% of DOT's orders for the items manufactured by these Companies are kept reserved for them. However, no concession/preference is given in respect of price, quality and supply schedule.

दिल्ली की ऐतिहासिक कुर्सी का गायब होना

1548. श्री जगदीश प्रसाद माथुर:
श्री सुरेश पचौरी:

क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 20 जुलाई, 1995 के "नवभारत टाइम्स" के प्रथम पृष्ठ पर "कहां गई लियाकत अली की कुर्सी" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ओर आकृष्ट किया गया है; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी विस्तृत जानकारी क्या है और क्या इस मामले में शामिल उन व्यक्तियों की पहचान करने और उन्हें दण्डित करने हेतु कोई कदम उठाये गये हैं जिन्होंने पाकिस्तान सरकार की आकांक्षाओं को पूरा किया है, यदि हां, तो इन कदमों का ब्यौरा क्या है?

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पी.एम. सईद): (क) जी हां, श्रीमान।

(ख) दिल्ली वक्फ बोर्ड ने सूचित किया है कि सुन्नी मजलिस औकाफ के प्रथम अध्यक्ष की कुर्सी वर्ष 1986-87 तक उनके कार्यालय की शोभा बढ़ाती रही जबकि उसे मरम्मत और रंग रोगन करने के बहाने वहां से हटाया गया। वर्ष 1992 में की गई जांच में बोर्ड के पूर्व सहायक सचिव ने कहा था कि यह कुर्सी दिल्ली वक्फ बोर्ड के एक पूर्व सदस्य श्री अब्दुल हई अन्सारी द्वारा मरम्मत के लिए ले जायी गई है, तथा बोर्ड के कनिष्ठ अभियंता को कुर्सी वापस लाने के लिए बार-बार दिए गए निर्देशों के बावजूद भी यह कुर्सी कभी वापस नहीं आई।

दिल्ली वक्फ बोर्ड ने एक तीन सदस्यीय समिति का गठन उन परिस्थितियों की जांच करने के लिए किया है जिनके अधीन बोर्ड के कार्यालय से यह कुर्सी हटाई गई थी।